मुख्य प्रश्न:

जब यीशु ने योहन 20:22–23 में कहा:
“जिसे तुम पाप क्षमा करोगे, वे क्षमा पाएंगे; जिसे तुम पापों को रोकोगे, वे रोक दिए जाएंगे,”
क्या इसका मतलब है कि ईसाई—या चर्च के नेता—को अपनी मर्जी से पाप क्षमा करने या रोकने का अधिकार है?

1. यीशु का आशय क्या था?

सतही अर्थ में, यह वाक्यांश इस प्रकार समझा जा सकता है कि सामान्य लोग—या चर्च के नेता—व्यक्तिगत रूप से पाप क्षमा करने या रोकने का अधिकार रखते हैं। लेकिन यीशु ऐसा नहीं सिखा रहे थे। संदर्भ बेहद महत्वपूर्ण है।

उनके यह शब्द कहने से ठीक पहले, योहन 20:22 कहता है:

“और जब उसने यह कहा, तो उसने उन पर प्राण फूंका और कहा, ‘पवित्र आत्मा ग्रहण करो।’”

यीशु अपने शिष्यों को सुसमाचार के कार्य के लिए नियुक्त कर रहे थे। पाप क्षमा करने की शक्ति उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं दी गई थी, बल्कि यह पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य के माध्यम से सुसमाचार के प्रचार में दी गई थी।

2. केवल ईश्वर ही पाप क्षमा कर सकता है

संपूर्ण शास्त्र में यह स्पष्ट है कि केवल परमेश्वर ही पाप क्षमा कर सकता है। यह बाइबिल की मूल शिक्षाओं में से एक है।

लूका 5:21

“यह कौन है जो परमाधर्मभंग की बातें कहता है? केवल परमेश्वर ही पाप क्षमा कर सकता है।”

अगले पदों में (लूका 5:22–24), यीशु ने एक लकवेग्रस्त आदमी को चंगा किया ताकि यह दिखा सके कि उसे पाप क्षमा करने की दैवीय अधिकार प्राप्त है:

“ताकि तुम जान सको कि मनुष्यपुत्र के पास पृथ्वी पर पाप

क्षमा करने का अधिकार है…” (पद 24)

इसलिए, पाप क्षमा करना केवल ईश्वर का विशेषाधिकार है। लेकिन अब, मसीह के क्रूस पर किए गए कार्य और पवित्र आत्मा के आने के द्वारा, चर्च वह माध्यम बनता है जिसके द्वारा यह क्षमा प्रचारित और पुष्टि की जाती है।

3. प्रेरितों और चर्च की भूमिका

जब यीशु ने योहन 20 में यह आदेश दिया, तो वे प्रेरितों को सुसमाचार प्रचार के लिए नियुक्त कर रहे थे। जो लोग उनके संदेश पर विश्वास करते और पश्चाताप करते, वे क्षमा पाते। जो इनकार करते, वे अपने पाप में बने रहते।

यह उदाहरण मत्ती 10:13–15 में भी मिलता है:

“यदि वह घर योग्य है, तो तुम्हारा शांति उस पर आए; यदि योग्य नहीं है, तो तुम्हारा शांति वापस लौट जाए… मैं तुमसे सच
कहता हूँ कि सदाोम और गोमोर्रा की भूमि के लिए उस दिन अधिक सहनशील होगा बनिस्बत उस नगर के।”

सुसमाचार को अस्वीकार करना उस परमेश्वर को अस्वीकार करना है जिसने इसे भेजा है—मसीह स्वयं (देखें लूका 10:16)। इसलिए, प्रेरित अपनी शक्ति से पाप क्षमा नहीं करते थे, बल्कि वे व्यक्ति की सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया के आधार पर परमेश्वर की क्षमा की घोषणा करते थे।

4. चर्च के भीतर अधिकार

यीशु ने जो अधिकार प्रेरितों को दिया, वह चर्च में बना रहता है—न कि व्यक्तिगत पूर्ण अधिकार के रूप में, बल्कि सुसमाचार की निष्ठापूर्ण घोषणा और चर्च अनुशासन के अभ्यास के माध्यम से।

क) प्रार्थना और पुनर्स्थापना के माध्यम से क्षमा

याकूब 5:14–15

“क्या तुम्हारे में कोई बीमार है? वह चर्च के पुरोहितों को बुलाए, वे उसके लिए प्रार्थना करें और उसे प्रभु के नाम से
तेल से मलें। विश्वास की प्रार्थना रोगी को बचाएगी, और प्रभु उसे उठाएगा; यदि उसने पाप किए हैं, तो उसे क्षमा मिलेगा।”

यह दिखाता है कि चर्च द्वारा, विशेष रूप से उसके नेताओं के माध्यम से, मध्यस्थता एक परमेश्वर द्वारा नियुक्त माध्यम है जिसके द्वारा विश्वासी के जीवन में क्षमा का अनुभव होता है।

ख) अनपश्चातापी के लिए चर्च अनुशासन

यीशु ने यह भी सिखाया कि यदि कोई लगातार पश्चाताप नहीं करता, तो चर्च उसे विश्वास से बाहर समझ सकता है।

मत्ती 18:17–18

“यदि वह सुनने से इनकार करे, तो उसे चर्च को बताओ; यदि वह
चर्च को भी न माने, तो तुम्हारे लिए वह एक आदमखोर और एक करचोर समान होगा। सच मैं तुमसे कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में भी बांधा जाएगा; और जो कुछ तुम
पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में भी खोला जाएगा।”

यह “बंधन और मुक्ति” की भाषा चर्च की उस अधिकार को दर्शाती है जो वह परमेश्वर के राज्य के परिचर के रूप में निभाती है—सुस्पष्ट शिक्षण और आध्यात्मिक विवेक के आधार पर यह पुष्टि करना कि कौन परमेश्वर के साथ सही संबंध में है।

यीशु के योहन 20:22–23 में दिए गए शब्दों से यह नहीं लगता कि विश्वासियों को व्यक्तिगत रूप से असीमित अधिकार दिया गया है कि वे पाप क्षमा करें। बल्कि वे पुष्टि करते हैं कि चर्च, पवित्र आत्मा से भरा हुआ, परमेश्वर का प्रतिनिधि बनकर, उन लोगों को क्षमा की घोषणा करता है जो पश्चाताप करते हैं और मसीह में विश्वास रखते हैं—और उन पर न्याय करता है जो उसे अस्वीकार करते हैं।

हाँ, पापों को “क्षमा करने या रोकने” का अधिकार है—लेकिन यह हमेशा सुसमाचार में आधारित होता है, पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होता है, और विश्वासियों की समुदाय के भीतर अभ्यास किया जाता है, कभी भी व्यक्तिगत या मनमाना अधिकार नहीं।

ईश्वर आपको उसकी सच्चाई को समझने और उसकी आज्ञा पालन करने के लिए आशीर्वाद दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp